Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

सर्वोदय आन्दोलन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Roshan Nain*

PGT in Political Science, Government Girl Senior Secondary school Kalwan, Jind, Haryana

शोध-आलेख सार – *भारतीय परम्परा तथा संस्कृति से दूर न भागते हुए तथा नवीन आदर्शों से दूर न भागते हुए, समाज सुधार व सर्वांगीण उन्नति महात्मा गांधी के आदर्शों का आधार है। इसी आदर्श का मूर्त रूप सर्वोदय आन्दोलन है। सर्वोदय से हमारा अभिप्राय गांधीवादी विचारधारा से है। समाज को बदलने के लिए भारत में बहुत से लोगों ने विचार व्यक्त किये है, लेकिन समाज को कैस बदलना चाहिए उसके बारे में कोई मतैक्य नहीं है। गांधीवादियों की एक विचारधारा सर्वोदय है। भारत की आजादी के लिये जो गांधीजी ने आन्दोलन चलाया, उसमें सामाजिक परिवर्तन सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये। लोगों का यह मानना था कि भारत की स्वतंत्रता के बाद गांधी विचारधारा के आधार पर नये समाज की स्थापना होगी, लेकिन जब सरकार बनी, उसने अपने तरीके से कार्य करना प्रारम्भ किया तथा उसने समाजवाद पर अधिक जोर दिया जो न तो पूर्णत्या माक्र्सवादी था और न ही गांधीवादी। इस प्रकार इन दोनों का मिश्रण समाजवाद के नाम पर भारत में अपने लगा।*

मूल शब्द: *भारतीय परम्परा, संस्कृति सर्वोदय, सामाजिक परिवर्तन, स्वतंत्रता, गांधी विचारधारा, समाज।*

----------X----------

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। शोध से सम्बन्धित सामग्री भारत की विभिन्न जनगणना रिपोर्टों तथा कुछ सन्दर्भ पुस्तकों से ली गई है। शोध को गति देने के लिए अनुभाविक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। अंततः सम्पूर्ण शोध पत्र वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है।

शोध के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैः-

1. सर्वोदय आन्दोलन का भारतीय सस्कृति व समाज पर प्रभाव।
2. सर्वोदय आदोलन में महात्मा गांधी की क्या भूमिका थी ?
3. सर्वोदय आदोलन में विनोबा भावे की क्या भूमिका थी ?

जो लोग गांधीवादी विचारधारा में विश्वास करते थे, उन्होंने कहा कि हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिये, जिससे सामाजिक संरचना गांधीवादी आधार पर निर्मित हो। आज से लगभग 80 वर्ष पूर्व गांधीजी ने एक पुस्तक लिख थी, हिन्द स्वराज। इस पुस्तक में गांधीवाजी ने उन विचारों को अभिव्यक्त किया जिनके माध्यम से वे स्वतंत्र भारत में परिवर्तन लाना चाहते थे और वे एक नई व्यवस्था को स्थापित करना चाहते थे। प्रश्न उठता है कि गांधीजी किस प्रकार का समाज चाहते थे? गांधीजी की दृष्ठि में जो समाज था, उसका मूल दृष्टिकोण चारित्रिक तथा नैतिक था। वे इन्हीं आधारों पर समाज की सरचना करना चाहते थे। यह चारित्रिकता व नैतिकता 6 आधारों पर आधारित थीः

1. सत्य
2. अहिंसा
3. सत्याग्रह
4. स्वदेशी
5. समानता
6. श्रम की समानता

www.ignited.in

गांधीजी ने कहा कि सत्य का अर्थ है; दूसरों की सेवा करना, उसी से सत्य की प्राप्ति होगी। अहिंसा भी एक प्रकार का पे्रम है। सत्याग्रह व संघर्ष है जो अहिंसा व पे्रम के आधार पर समाप्त करने को प्रयत्न करता है। स्वदेशी से अभिप्राय गांधीजी का तीन चीजों से थाः

(1) गाँव अपने उत्पादन से आत्मनिर्भर होंगे तथा जो उत्पादन होगा, वह अपने उपयोग के लिये होगा न कि विनियम के लिये। शहरों का जो एकाधिकार बढ़ताजो रहा है, इस एकाधिकार की समाप्ति भी स्वदेशी के अन्तर्गत होगी।

(2) हर प्रकार के शोषण को समाप्त किया जाये चाहे वह किसी भी तरीके से हो।

(3) जब लोगों की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो जायें तो लोगों को भौतिकवादी बनने से रोका जाए।

इसके अतिरिक्त हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा अस्पृश्यता का निवारण भी इस स्वदेशी भावना के अन्तर्गत मानते थे।

समानता से उनका अभिप्राय समाज में लोगों के अधिकारों व कत्र्तव्यों की समानता से था। श्रम की समानता-मानसिक व शारीरिक कार्य दोनों में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए। इस प्रकार यह गांधी दर्शन है, लेकिन गांधीजी की मृत्यु स्वतंत्रता प्राप्त होते ही हो गई लेकिन जो लोग गांधीजी के अनुयायी थे, उन्होंने इसका प्रयोग करना प्रारम्भ किया। इसमें विनोबा भावे द्वारा चलाया गया भू-दान आन्दोलन प्रमुख है।

भू-दान (विनोबा भावे) आंदोलन

यह तेलंगाना में प्रारम्भ हुआ। यहाँ पर कम्युनिस्टों का जोर इतना था कि उन्होंने हथियारों से जमींदारों की हत्या करना प्रारम्भ कर दिया तथा जमीन छीन कर गरीबों व भूमिहीनों में वितीरत करते थे, लेकिन सरकार उन गरीबों पर मुकदमें लगाती। इन्ही परिस्थितियों में बिनोबा भावे तेलंगाना गये। उन्होंने सोचा कि क्यों न जमींदारों के मन में ऐसी प्रेरणा जागृत की जाए जिससे वे अपनी भूमि का हिस्सा भूमिहीनों को प्रदार कर दें। यही भू-दान आन्दोलन था, जिससे अहिंसा के माध्यम से चलाया गया था तथा गरीबों को भूमि प्राप्त होने लगी थी। प्रारम्भ में इस आन्दोलन को काफी सफलता मिली। उसके बाद ग्रामदान व श्रमदान हुआ, लेकिन जैसे-जैसे यह आन्दोलन बढ़ा; वैसे ही वैसे इसमें खिराव व विभिन्नताएँ आने लगीं। इसलियें यह आवश्यकत समझा गया कि गांधी जी के विचारों को नया रूप दिया जाए-वह विचार था-सर्वोदय।

यह आंदोलन पूर्णतः गांधीवादी नहीं था लेकिन गांधी दर्शन का विस्तृत स्वरूप था। सर्वोदय विचारधारा नई सामाजिक संरचना का निर्माण करना चाहती थी। सर्वोदय के मूल आधार थेः

1. व्यक्ति स्वतंत्रता

इसमें अभिप्राय व्यक्ति किसी का गुलाम नहीं है लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि जो शक्तिशाली हो, वह अधिक स्वतंत्र हो और जो कमजोर व कम शक्तिशाली है, वह कम स्वतंत्र हो। यह व्यक्ति स्वातन्त्र्य समाज के व समुदाय के हित को ध्यान में रखते हुए होना चाहिये इसलिये जयप्रकाश नारायण ने कम्यूनिटेरियन सोसायटी की अवधारणा को सामने रखा। वे समाज को समुदाय के आधार पर चलाना चाहते थे तथा उनका मानना था कि समाज का हित सर्वोपरि होना चाहिए।

2. "राज्य" नहीं "प्राज्ञ"

राज्य से हमारा अभिप्राय वह सरकार है जो निरिचत क्षेत्र में शासन चलाती है, वही राज्य है। प्राज्ञ का अर्थ है; जनशक्ति। जयप्रकाश नारायण ने कहा कि राज्य की शक्ति को समाप्त कर जनशक्ति के पास अधिकार होने चाहिए।

3. राजनीति नहीं लोकनीति

हमें राजनीति के स्थान पर लोकनीति चलानी चाहिये अर्थात् समस्त जनता के कल्याण की भावना से कार्य करना चाहिये। यह ऐसी नीति है जो गैर दलीय है। यही लोकनीति है।

इस प्रकार इनका कहना है कि राज्य व राजनीति दोनों एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई होती हैं। ये दोनों कुछ ही लोगो के हाथ में केन्द्रित हैं। इसी दृष्टि से इन्होंने लोकनीति की बात कही थी। लोकनीति के माध्यम से शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा। सर्वोदयवादी यही चाहते थे कि शक्ति का विकेन्द्रीकरण हो और यह विकेन्द्रीकरण समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों में होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के पास शक्ति का केन्द्रीकरण नहीं होना चाहिये।

सर्वोदयवादियों का विश्वास था कि बड़े शहरों के बजाए छोटे-छोटे समुदाय बनाये जाने चाहिए और ये छोटे-छोटे समुदाय पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर होने चाहिए। उत्पादन की सबसे अधिक खपत इन्हीं गाँवों व छोटे समुदायों में होनी चाहिये। जिने अधिक से स्वायत्त हों, उतनी अधिक स्वायत्तता इन्हें मिलनी चाहिए।

सर्वोदयवादियों का कहना है कि समाज राज्यविहीन होना चाहिए। सभी कार्य सहमति के आधार पर होने चाहिये।

www.ignited.in

समाज की सम्पूर्ण सम्पत्ति व भूमि पर किसी का व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं होना चाहिए बल्कि सम्पूर्ण समाज का आधिपत्य होना चाहिये। इस विचारधारा का परिपक्व रूप विनोबा भावे ने भू-दान व ग्रामदान के माध्यम से दिया।

इस समय यह सोचा गया कि सर्वोदय विचारधारा के आधार पर ही गाँवो में बहुत बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है और व्यापक समाजिक परिवर्तन लाया जायेगा, लेकिन इसका विस्तृत स्वरूप सम्पूर्ण क्रान्ति के साथ जुड़ा हुआ है।

सम्पूर्ण क्रान्ति

इस आन्दोलन का प्रारम्भ बिहार से हुआ तथा इसको चलाने वाले गैर साम्यवादी विचारों में विश्वास रखने वाले विद्यार्थी थे। इन्होंने बिहार छात्र संघर्ष समिति का निर्माण किया। इसकी विभिन्न शाखाओं का निर्माण गाँवों व शहरों में किया। इसी संयुक्त स्वरूप् ने आन्दोलन को चलाया। इसमें सभी राजनैतिक दोलों के छात्र सम्मिलित थे। ये लोग लड़ाकू प्रवृत्ति के थे तथा अधिकांश तात्कालिक प्रकृति पर अपने-आप को केन्द्रिय किये हुए थे, जो विस्तृत समाजिक परिवेश का आधार हैं। उसके साथ में ये कम जुड़े हुऐ थे। मूलतः इसी संगठन ने आन्दोलन प्रारम्भ किया था।

धीरे-धीरे इस आन्दोलन को जयप्रकाश नारायण ने नेतृत्व प्रदान किया और इन्ही के व्यक्तित्व के चारों तरफ केन्द्रित होता चला गया। जयप्रकाश नारायण का व्यक्तित्व चमत्कृत था और वैचारिक दृष्टि से वे माक्र्सवादी से समाजवादी व साम्यवादी से गांधीवादी होते चले गये।

जयप्रकाश नारायण ने इस सम्पूर्ण क्रान्ति के आन्दोलन का नेतृत्व इसलिये स्वीकार किया, क्योंकि उसी समय यूरोप व एशिया के अनेक देशों में छात्रों ने क्रान्ति की थी। इसलिये जयप्रकाश नारायण को विश्वास हो गया कि भारत के छात्र भी क्रान्ति भी छात्रों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। इसलिए जयप्रकाश नारायण ने इस आन्दोलन को नेतृत्व देना स्वीकार कर लिया।

उद्देश्य

इस आन्दोलन का अन्तिम उद्देश्य सम्पूर्ण क्रान्ति है और 5 जून, 1975 को यह सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ और इसे अखिल भारतीय स्तर पर स्वीकार्य किया गया। यह माना जाने लगा कि यह आन्दोलन भारत में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में क्रान्ति ला सकेगा। आन्दोलन चलाने वालों का विश्वास था कि आंतरिक व बाह्य दोनों स्थानों पर परिवर्तन हो सकेगा और ऐसा परिवर्तन किया जाए जिससे व्यक्तियों तथा संस्थाओं के बदलने में सारा कार्य किया जाए और यह बताया जाए कि सम्पूर्ण क्रान्ति के बाद का समय जातिविहीन, राज्यविहीन तथा वर्गविहीन होगा।

आन्दोलन के दौरान न्मिन मुद्दों को उठाया गयाः

- कीमतो में बढ़ोतरी को कम करवाने का प्रयास करना।
- शिक्षा में सम्बन्धित कठिनाईयाँ: छात्रों का भविष्य किस प्रकार का होगा तथा शैक्षणिक संस्थानों में अधिक से अधिक सुविधाओं को मुहैय्या करवाया जाये।
- भ्रष्टाचार को जड़मूल से समाप्त करना।
- स्वतंत्रता बनाम परतंत्रता यानी देश में पुनः अधिनायकवादी शक्तियाँ सिर उठा रही हैं, उसे कुचलना तथा प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को लागू करना।

इन्ही मुद्दों पर यह आन्दोलन चलाया गया।

आन्दोलन के लिए निम्न कार्यक्रम बनाये-

- लोगों में चेतना जागृत करना और आन्दोलन के स्वरूप का निर्धारण करना।
- समाज को अपने पक्ष में करने का कार्यक्रम भी चलाया गया। समाज के सामने अपने कार्यक्रमों को प्रस्तुत करके उन्हें अपने पक्ष में करना।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम उन लोगों के लिये चलाना जो आन्दोलन के समर्थक तथा नेतृत्व हैं।

आन्दोलन को चलाने के लिए निम्न कार्य-

- सत्याग्रह।
- कर न चुकाना।
- जनता सरकार की स्थापना।
- चुनाव सुधार।

- शैक्षणिक सुधार।

इस प्रकार इस आन्दोलन को चलाने के लिए छात्रों का सभी राजनैतिक दलों ने साथ दिया। सभी राजनैतिक दलों की विचारधारा में मतभेद था लेकिन इस समय वे सभी साथ आ गये। एम.एस.शाह ने कहा कि इस आन्दोलन में मुख्य रूप् से नगरों का मध्यम वर्ग जुड़ गया, लेकिन निम्न वर्ग ने इस आन्दोलन का कोई साथ नहीं दिया।

REFERENCES :

1. Mukherji, P.N. (1966). "Gramdan in Village Berain : Sociological Analysis," Human Organization, 25 (1), p. 30
2. Oommen, T.K. (1966). "Myth and Reality in India's Communitarion Villages, "Joumal of Common Wealth Political Stadies, 4 (2), p. 44
3. Oommen, T.K. (1966). Non-violent Approach to Land Reforms: A Case of an Agrarian Movement in India, Zeitchrift fur Asulandische Landwirt schaft 9 (10) p. 139
4. Mukherji, P.N. (1966). "Gramdan in Village Berain : Sociological Analysis," Human Organization, 25 (1), P-33
5. Oommen, T.K. (1966). "Myth and Reality in India's Communitarion Villages, "Joumal of Common Wealth Political Stadies, 4 (2), p. 48
6. Oommen, T. K. (1966). Non-violent Approach to Land Reforms: A Case of an Agrarian Movement in India, Zeitchrift fur Asulandische Landwirt schaft 9 (10) p. 142

Corresponding Author

Roshan Nain*

PGT in Political Science, Government Girl Senior Secondary school Kalwan, Jind, Haryana

spnain.22@gmail.com